ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)

REVIEW OF RESEARCH

VOLUME - 6 | ISSUE - 9 | JUNE - 2017

गढ़वाल में मुस्लिम समाज के सांस्कृतिक समन्वय का वर्तमान परिदृश्य में ऐतिहासिक अध्ययन।

डॉ. कैसर अली
शोध अध्येता , हे. न. ब. (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

प्रस्तावना :

नव सहस्त्राब्दि में 09 नवम्बर, 2000 ई0 को भारत के 27वें राज्य के रुप में उत्तरांचल नामक नये हिमालयी राज्य की स्थापना हुई, देहरादून इसकी अस्थायी राजधानी बनाई गई। 1 जनवरी, 2007 ई0 को केन्द्र सरकार द्वारा 'उत्तरांचल' प्रदेश का नाम बदल कर 'उत्तराखण्ड' कर दिया गया। क्षेत्रीय विकास एवं भाषा–बोली तथा सांस्कृतिक पहचान को कायम करने की जनाकांक्षा के परिणाम स्वरुप यह राज्य अस्तित्व में आया, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 53,484 वर्ग किमी0 है। 2011 ई0 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 1,01,16,752 है जिसमें कुल पुरुष जनसंख्या 51,54,178 तथा कुल महिला जनसंख्या 49,62,574 है। यह नया राज्य दो प्रशासनिक ईकाइयों में विभक्त है। पहला कुमाऊँ मंडल और दूसरा गढ़वाल मंडल। इस राज्य का पूर्वी भाग कुमाऊँ और पश्चिमी भाग गढ़वाल कहा जाता है। (पोखरिया, देवसिंह, 2009: 2–3) गढ़वाल मंडल के अन्तर्गत कुल सात जिले आते हैं जिसमें देहरादून 3088 वर्ग किमी0, पौड़ी 5329 वर्ग किमी0, टिहरी 3642 वर्ग किमी0, उत्तरकाशी 8016 वर्ग किमी0, चमोली 8030 वर्ग किमी0, हरिद्वार 2360 वर्ग किमी0 और रुद्रप्रयाग 1984 वर्ग किमी0 सम्मिलित है। गढ़वाल मंडल उत्तराखण्ड के कुल क्षेत्रफल का 32,449 वर्ग किमी0 भू–भाग और प्रतिशतता के आधार पर 60.67 प्रतिशत है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शिव प्रसाद डबराल चन्द्रवंशी शासक अजयपाल को गढ़वाल राज्य (रियासत) का वास्तविक संस्थापक मानते हैं। (पोखरिया, देवसिंह, 2009: 32) इस प्रकार गढ़वाल राज्य के बारे में ऐतिहासिक प्रमाण परमार या पंवार वंशीय राजा अजयपाल (1493–1519 ई0) के शासनकाल से प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध–पत्र मुख्यतयाः गढ़वाल में मुस्लिम समाज की जनसांख्यिकीय स्थिति और वर्तमान परिदृश्य मे इस भू–भाग में इनके सांस्कृतिक समन्वय का क्रमिक ऐतिहासिक अध्ययन है।

उत्तराखण्ड में इस्लाम धर्म का आगमन 17वीं–18वीं सदी के मध्य हुआ। चंद शासकों के भी मुग़ल दरबार से संबंध रहें। मुसलमानों का उत्तराखण्ड में आगमन व्यापारी और आक्रान्ता दो रुपों में हुआ। सबसे पहले मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन तुगलक ने कराचल पर्वत (कूर्मांचल) पर आक्रमण 1337–38 ई0 में किया। वर्षा के कारण वह अपने इस अभियान में असफल रहा। 1380 ई0 में फिरोजशाह तुगलक ने कटेहर पर आक्रमण किया। असहाय लोगों पर अत्याचार किया और उनका धर्म परिवर्तन कराया।

कल्याणचंद ने सरदार ख्वास खाँ को कुमाऊँ में शरण दी। 1743 ई0 में बदायूँ–रुहेलखण्ड के रुहेला आक्रमणकारी रहमत खाँ ने सात माह तक अल्मोड़ा पर आधिपत्य बनाए रखा। गढ़नरेश महीपतशाह के शाहजहाँ के सिंहासनारोहण के समय उपस्थित न होने पर 1653 ई0 में तथा पुनः 1654 ई0 में गढ़वाल पर मुग़ल आक्रमण हुआ। सैकड़ों लोगों की जानें गईं और हजारों को गुलाम बनाकर उनका धर्मान्तरण कर दिया गया। बलभद्र शाह के समय मुग़ल दरबार से संबंधों में सुधार आया। स्थायी रुप से कई मुसलमान जब कस्बों में बस गये तब ईदगाह और मस्जिदें बनीं और इस्लाम धर्म के उलेमाओं (धर्मगुरुओं) का आगमन हुआ जिन्होंनें इस्लाम धर्म के अनुयाइयों को उनकी मजहबी सिद्धान्तों का पालन कराने में सहायता प्रदान की। पहली मस्जिद अल्मोड़ा में बनी। धीरे–धीरे अन्य क्षेत्रों में भी मस्जिदों का निर्माण हुआ। कालान्तर में धोबी, बढ़ई, जुलाहे, मोची, कसाई, नाईं आदि व्यवसायों वालें मुसलमानों का भी यहाँ आगमन हुआ।

उत्तराखण्ड के मुसलमानों में मुग़ल, पठान, शेख, सैय्यद आदि सभी प्रकार के मुसलमान वर्ग उपस्थित हैं। सुन्नी और शिया में सुन्नी सम्प्रदाय के लोग अधिक हैं। चुरेड़ (मनिहार) लोग निम्नवर्ग के हिंदुओं से धर्मांतरित मुसलमान हैं। अधिकांश मुसलमान इस्लाम धर्म के नियमान्तर्गत धर्माचरण करते हैं, नमाज अदा करते हैं, रोजा रखते हैं। ईद, मुहर्रम आदि अवसरों पर अपने पास–पड़ोस के सभी धर्मों के लोगों को सादर आमंत्रित करते हैं। रामलीला, ताजिया निर्माण, पर्वों, मेलों और तीज त्योहारों पर हिन्दू–मुसलमान दोनों एक दूसरे को पूर्ण सहयोग करते हैं। हिन्दू भी कई मुस्लिम संतो यथा– कालू सैय्यद, शाहपीर आदि की मजारों पर चादरें चढ़ाते हैं और मन्नतें माँगते हैं। गढ़वाल में 'सैय्यद' को लोकदेवता जैसी मान्यता है। उत्तराखण्ड की भाषा–बोलियों के साथ ही खान–पान और रहन–सहन पर भी मुस्लिम प्रभाव पड़ा है। आज सारे मुसलमान यहाँ सौहार्दपूर्ण ढंग से

रहते हैं। पीढ़ियों से रहते आये कई मुसलमान अपने को उत्तराखण्डी कहने में गर्व का अनुभव करते हैं। (पोखरिया, देवसिंह, 2009: 81–82)

पुरातात्विक दृष्टिकोण से भी देखा जाएँ तो गढ़वाल मण्डल के देहरादून जनपद से विकासनगर (पूर्व में चौहडपुर) डाकपत्थर होते हुए टौन्स नदी व यमुना नदी के संगम स्थल डाकपत्थर से 5 किमी0 की दूरी पर स्थित मगध के मौर्यवंशीय सम्राट अशोक (273 ई0पू0–232 ई0पू0) के कालसी शिलालेख जिसे जान फॉरेस्ट द्वारा सन् 1860 में प्रकाश में लाया गया, प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण चौदह आदेशों में से साँतवा आदेश 'सभी धर्मावलम्बियों को सर्वत्र बसने की सुविधा हो क्यों कि वे सब ही भाव की शुद्धि चाहते हैं' (उनियाल, हेमा, 2011: 65) इस बात की पुष्टि करता है कि उत्तराखण्ड प्राचीनकाल से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा में विश्वास करता है और समय बीतने के साथ ही इसने विभिन्न धर्मों के मतावलम्बियों को अपने अन्दर आत्मसात् किया है। उत्तराखण्ड में विभिन्न सम्प्रदायों के श्रद्धालुगण समय–समय पर आध्यात्मिक यात्राओं के द्वारा अपनी धार्मिक आस्था को सुदृढ़ करने यहाँ आते है और सांस्कृतिक एकता का परिचय देते हैं। संयोगवश वैष्णवों का बदरीनाथ, शैवों का केदारनाथ, शाक्तों का कालीमठ यहीं विद्यमान हैं। यही नही सिखों का पवित्र गुरुद्वारा हेमकुण्ड साहब, नानकमत्ता, मीठा–रीठा तथा रुड़की (हरिद्वार) से लगभग 8 किमी0 दूर कलियर गाँव में स्थित मुस्लिमों के प्रसिद्ध सूफी संत हजरत अलाउद्दीन अहमद 'साबिर', इमामुद्दीन और किलकिली साहब की मजार धर्म स्थल के रुप में पिरान कलियर मे स्थित है जिससे यह क्षेत्र राष्ट्रीय एकता का परिचायक बन गया है। (नवानी/रावत, 2010: 30)

अकबर के नौ रत्नों में से एक दरबारी मुस्लिम कवि अब्दुर्रहीम खानखाना ने इस क्षेत्र से प्रस्फुटित होकर उत्तराखण्ड सहित देश के बड़े भू–भाग को अनादि काल से सांस्कृतिक एकता के सूत्र मे बाँधने का काम करने एवं विभिन्न सभ्यताओं को जन्म देने वाली जीवनदायिनी गंगा की स्तुति बड़े मार्मिक शब्दों में की है –

अच्युत चरन तरंगिनी, शिव शिर मालति माल।
हरि न बनायौ सुरसरि, कीन्हौ इन्दव भाल।।

अर्थात् गंगा में स्नान करने वाले व्यक्ति या तो विष्णु तुल्य है या शिव तुल्य। कवि विष्णु नहीं बनना चाहता, क्यों कि ऐसा होने पर गंगा विष्णु पदी होने से चरण तल में होगी। वह तो शिव बनना चाहेगा। क्यों कि शिव गंगा को सिर पर धारण करते हैं। (नवानी/रावत, 2010: 30–31) इस प्रकार एक मुसलमान कवि भी गंगा की प्रशंसा अपने शब्दों में करता है जो गंगा के प्रति मुस्लिमों की अगाध श्रद्धा को दर्शाता है।

हिमालय के गोद में बसे सीमांत जनपद चमोली के बद्रीनाथ में स्थित विश्वप्रसिद्ध बद्रीनाथ धाम में भोर का ऐलान करने वाली आरती –

'पवन मंद सुगंध शीतल हेम मंदिर शोभितम्।
निकट गंगा बहत निर्मल बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
शेष सुमिरन करत निशदिन धरत ध्यान महेश्वरम्।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
शक्ति गौरी गणेश शारद नारद मुनि उच्चारण्।
जोग ध्यान अपार लीला श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
इन्द्र चन्द्र कुबेर धुनि कर धूप दीप प्रकाशितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जै जै बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम्।
श्री लक्ष्मी कमला चंवरडोले श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
कैलाश में एक देव निरंजन शैल शिखर महेश्वरम्।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्।
श्री बद्री जी के पंच रत्न पढ़त पाप विनाशनम्।
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य प्राप्यते फलदायकम्।।'

इस आरती को चमोली जिले में स्थित नंदप्रयाग के एक मुसलमान नसीरुद्दीन सिद्दिकी ने आज से लगभग डेढ़ सौ साल पहले रची थी। बद्रीनाथ पर अपनी अगाध श्रद्धा के कारण नसीरुद्दीन, बजरुद्दीन के नाम से विख्यात हुए। (रावत, देवेन्द्र, 2011: 1–2, दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र, 24 जुलाई, 2011 में प्रकाशित लेख) इस प्रकार के सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल राम के भक्त और रहीम के बंदो को आपस मे एक मजबूत डोर से बाँधे हुए है जो समय बीतने के साथ और भी अटूट और सुदृढ़ होती जा रही है।

प्रतिवर्ष सावन माह लगते ही कंधों पर कावड़ रखकर लाखों श्रद्धालु देश के विभिन्न भागों से गंगा जल लेने हरिद्वार से गोमुख तक उमड़ पड़ते हैं। इस यात्रा के प्रारम्भ होने में लोक मान्यता है कि क्षत्रियों का संहार करने के बाद इस पाप से मुक्ति पाने के लिए पश्चाताप् स्वरुप परशुराम ने कांवड़ उठाकर पैदल यात्रा की थी और भगवान शिव को गंगाजल अर्पित कर उनकी कृपा प्राप्त की थी। इस पद यात्रा ने आने वाले समय में कांवड़ यात्रा का रुप धारण कर लिया। यह यात्रा सावन माह पर्यंत

चलती रहती है और कुम्भ के बाद उत्तराखण्ड की सबसे बड़ी धार्मिक यात्रा है। (पोखरिया, देवसिंह, 2009: 192) इस यात्रा में कंधों पर रखकर प्रयुक्त होने वाले कांवड़ अधिकांशतः गढ़वाल मंडल के हरिद्वार जनपद में स्थित मुस्लिम परिवार भी पूरी श्रद्धा से बनाते हैं जिससे इनकी रोजी–रोटी का प्रबन्ध सावन माह के दौरान हो जाता है। मुस्लिम परिवारों द्वारा कांवड़ निर्माण का यह कार्य कई पीढ़ियों से गढ़वाल के इस क्षेत्र में किया जा रहा है मुस्लिम कांवड़ कारीगर भी इस कार्य को करके संतुष्टि की प्राप्ति करते हैं।

सम्पूर्ण उत्तराखण्ड सहित गढ़वाल के कर्णप्रयाग तहसील में कभी दशहरे तो कभी दीपावली में मंचित होने वाली रामलीला यहाँ सांप्रदायिक सौहार्द और प्रेम का प्रतीक मानी जाती है। रामलीला यहाँ सर्वधर्म समभाव के रुप में मनायी जाती है जिसमें हिन्दू पात्रों के अलावा मुस्लिम एवं सिख समुदाय की भागीदारी भी महत्त्वपूर्ण होती है। कर्णनगरी में 1974 ई0 से आयोजित होने वाली रामलीला में मुस्लिम समुदाय के लोग विभिन्न पात्रों के अभिनय से लेकर सम्पूर्ण रामलीला के प्रबंध, संचालन और सुरक्षा का भी जिम्मा संभालते हैं। यहाँ के निवासी मुमताज खान वर्षों से रामलीला के अभिनय में रंग भरते आये जबकि नसीम खान, शफीक अहमद सहित अन्य मुस्लिम भी इस कार्य में सहयोग प्रदान करते आ रहे हैं। (अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र, 07 अक्टूबर, 2011 में प्रकाशित लेख) इसी प्रकार श्रीनगर (गढ़वाल) में रामलीला के मंचन में अल्लाह की इबादत करने वाले बंदे राम का दरबार सजाते हैं मंच संचालन का कार्य मुस्लिम समुदाय के परवेज अहमद करते है। श्रीनगर में दशहरे के समय आयोजित होने वाली रामलीला में यहाँ के मुस्लिम कारीगर मो0 उमर और मेराज रावण, मेघनाथ और कुम्भकर्ण के 35 से 40 फुट ऊँचे पुतले बनाते हैं। दशहरे के समापन के दिन इन पुतलों को जला दिया जाता है और इस तरह गढ़वाल का यह क्षेत्र धर्म और मजहब से ऊपर उठकर इंसानियत, बंधुत्व और भाईचारे को दर्शाता है। (दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र, 06 अक्टूबर, 2011 में प्रकाशित लेख)

गढ़वाल में प्रतिवर्ष फागुन मास में मनायी जाने वाली होली के त्योहार में मुस्लिम समुदाय के बड़े याकूब और हुसैनी बोडा की होली सबको याद आती है। अल्मोड़ा की प्रसिद्ध होली के साथ–साथ गढ़वाल में होली का यह रंग धर्म, जाति के बंधनों से कही ऊपर है। नई पीढ़ी के हुलियार चाहते है कि होली का वह पुराना रंग दिखे जिसमें आत्मीयता के रंग बिखरते थे जो हजार बार नहाने के बाद भी छूटते नहीं थें। गढ़वाल में होली राजघरानों की होली से शुरु हुई। राजघरानों की पुरानी राजधानी श्रीनगर एवं टिहरी में हुलियारों की बात ही कुछ अलग थी। नये युग में पौड़ी में बड़े याकूब और हुसैनी बोडा की होली को आज भी लोग याद करते हैं। धर्म से भले ही बड़े याकूब और हुसैनी बोडा मुस्लिम रहे हो पर होली के हुलियारों में इनका रंग और गायन वह आत्मीयता बिखेरता था, जिसे पुरानी पीढ़ी ने सहेज कर तो रखा है नई पीढ़ी भी उनके किस्सों को बड़ी उत्सुकता से सुनती और गाती है। गढ़वाल में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि समुदाय के लोगों की होली देखते बनती थी। (भट्ट, क्रान्तिः 2012, दैनिक हिन्दुस्तान, दैनिक समाचार पत्र, 07 मार्च, 2012 में प्रकाशित लेख)

गढ़वाल के टिहरी शहर में सभी संप्रदायों में मेल–जोल के रंग ऐसे घुले हैं कि होली का त्योहार हो या फिर दिवाली मुस्लिम समुदाय के बिना उनका उल्लास पूरा नहीं हो सकता यही बात मुस्लिमों के ईद और दूसरे त्योहारों के दौरान दिखाई देती है। हिन्दुओं के बिना उनके त्योहार भी अधूरे हैं। सद्भावना के इन्हीं रंगों के बीच अल्लारक्खी भी जन्मीं। महज आठ साल की थीं तो रघुनाथ मंदिर में गंगाजल चढ़ाने लगी। शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा जब उन्होंने रघुनाथ मंदिर में सबसे पहले जल न चढ़ाया हो। विरोध कभी भी कहीं नहीं हुआ। वह घर में कुरान रखती हैं तो गीता और रामायण भी उनके सिरहाने रहती है। उम्र का शतक लगाने जा रही अल्लारक्खी जब टिहरी शहर डूबा तो नई टिहरी बसने के बजाय उन्होंने चिन्यालीसौड़ में अपने बेटे के साथ रहना ज्यादा अच्छा समझा। कहती है कम से कम यहाँ से अविरल बहती गंगा तो दिखती है। उम्र के इस पड़ाव पर गंगा जी के दूर से ही दर्शन कर संतोष कर लेती हूँ। गंगा के बिना जीवन अधूरा लगता है। रोजा रखती हूँ, तो व्रत भी रखती हूँ। पहले नवरात्र में व्रत लिया करती थी। हिन्दू देवी देवताओं में उनकी पूरी आस्था है। साथ ही कुरान का भी पूरा सम्मान और आदर करती हैं। कहती हैं सबसे बड़ा धर्म तो मानव सेवा है। मानव रहेगा, तो धर्म भी रहेंगे। हर धर्म आगे बढ़ने, दूसरों को गले लगाने की ही प्रेरणा देते है। इसलिए कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं। (कुड़ियाल, रमेशः 2011, अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र, 06 अक्टूबर, 2011 में प्रकाशित लेख)

वर्तमान में सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में हिन्दू–मुस्लिम एकता और भाईचारे की संस्कृति दिखाई पड़ती है दोनों समुदाय के लोग आपस में मिलजुल कर अपने–अपने परम्पराओं, त्योहार और समारोहों को मनाते हैं। गढ़वाल क्षेत्र में मंदाकिनी घाटी के डांगी, सिनघटा और बेडूबगड़ गाँव में रहने वाले हिन्दू–मुस्लिम समुदाय के लोग आपस में मिलजुल कर ईद, दिवाली, होली और अन्य सभी पर्वों को एकजुटता और समर्पण भाव से उल्लास के साथ मनाते हैं। (रावत, लखपतः 2012, अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र, 20 अगस्त, 2012 में प्रकाशित लेख) इसी प्रकार से मुस्लिमों के ईद के त्योहार के अवसर पर गढ़वाल के अन्य भू–भाग यथा– पौड़ी गढ़वाल में कोटद्वार के ग्रास्टनगंज स्थित ईदगाह, सतपुली, दुगड्डा, लैंसडाउन, श्रीनगर (गढ़वाल) के ईदगाह, नई टिहरी के बौराड़ी शाही ईदगाह, चमोली के गोपेश्वर, चमोली जामा मस्जिद, जोशीमठ, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, घाट, गैरसैंण, थराली, उत्तरकाशी के जामा मस्जिद, हरिद्वार के ईदगाह, देहरादून आदि के ईदगाहों में ईद की नमाज एक साथ अदा की जाती है। (अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र, 01 सितम्बर, 2011 में प्रकाशित लेख)

गढ़वाल मंडल के हरिद्वार जनपद में सदी के प्रथम तथा विश्व के सबसे बड़े धार्मिक उत्सव महाकुम्भ का सफल आयोजन वर्ष 2010 में किया गया जो इस क्षेत्र के साम्प्रदायिक सद्भाव एवं एकता को विश्व पटल पर लाने में निर्णायक भूमिका में रहा। (नवानी / रावत, 2011: 11) इस महाकुम्भ के दौरान हरिद्वार जनपद के ज्वालापुर पांडेवाला में अल्लाह के बंदो अर्थात् मुस्लिम समुदाय के लोगों ने जूना अखाड़े के संतों एवं रमता पंचों का फूल–मालाओं के साथ तहेदिल से खैरमकदम (अभिनंदन) किया। इस अवसर पर संयासी, सनातन धर्म और इस्लाम को एक ही परिवार का अंग बता रहे थें और गंगा–जमुनी तहजीब की प्रशंसा कर रहे थें। जो इस तथ्य को दर्शाता है कि गढ़वाल का यह भू–भाग वर्षों से ही हिन्दू–मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय एवं एकता का परिचायक रहा है। (कुकरेती, दिनेशः 2010, दैनिक जागरण, दैनिक समाचार पत्र, 30 जनवरी, 2010 में प्रकाशित लेख)

गढ़वाल की पहाड़ियों एवं घाटियों में मुस्लिम समाज की स्थापना हो जाने से इस पर्वतीय अंचल में हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों को एक दूसरे के निकट आने का अवसर प्राप्त हुआ। अतः इन दोनों संस्कृतियों के समन्वय का क्षेत्र और अधिक व्यापक हो गया। (जैदी एवं जैदी 1985: 145–146) मुस्लिम समाज से सम्पर्क में आने के बाद गढ़वाली जनमानस ने भी अपने नाम उर्दू, अरबी और फारसी के शब्दों से चुनकर रखें, कहीं–कहीं तो आधे मुस्लिम और आधे हिन्दू नामों का भी प्रचलन दिखाई पड़ता है। जनसाधारण की भाषा, बोल–चाल, साहित्यिक कृतियों, लोकगीतों, पंवाड़ों आदि में भी इन शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रवेश हो गया। गढ़वाल के राजा सुदर्शन शाह ने 28 दिसम्बर सन् 1815 ई0 को अंग्रेजों से संधि के कारण राजधानी श्रीनगर से टिहरी स्थानांतरित की तब टिहरी में भी उर्दू–फारसी का काफी प्रसार–प्रचार हुआ और यहाँ पर स्थापित मस्जिद के मदरसे में मुस्लिम समुदाय के बालकों के साथ हिन्दू समुदाय के बालकों ने भी उर्दू–फारसी की शिक्षा प्राप्त की। वर्तमान में भी गढ़वाल की शिक्षा व्यवस्था में उर्दू–फारसी भाषा का विशेष स्थान है। इसके साथ ही टिहरी निवासी इमाम खाँ ने तो उत्तरकाशी में 1953 ई0 में स्थापित विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय से शास्त्री की शिक्षा प्राप्त कर शास्त्री इमाम खाँ बन गये (अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र, 07 अक्टूबर, 2011 में प्रकाशित लेख) जो यह दर्शाता है कि हिन्दू–मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय आज भी इस क्षेत्र में किस प्रकार से विकसित हो रहा है।

आज गढ़वाल की सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था में मुस्लिम समुदाय की भागीदारी भी स्पष्ट रुप से देखी जा सकती है यहाँ के समाज में काफी लम्बे समय से रहने के कारण मुस्लिम समुदाय के लोगों ने पर्वतीय संस्कृति के कई रीति–रिवाजों को अपने अन्दर आत्मसात् कर लिया है खान–पान से लेकर पहनावे तक में ये परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। गढ़वाली समाज की हिन्दू महिलाओं की भाँति मुस्लिम महिलाओं में भी पर्दा–प्रथा आज नाममात्र ही रह गयी है और गढ़वाल में बसे मुस्लिम समुदाय ने भी गढ़वाली बोली में पूर्णतः दक्षता प्राप्त कर ली है।

अंत में दिए गए जनसांख्यिकीय आकड़ों की सारणी द्वारा गढ़वाल मंडल के अन्तर्गत आने वाले सात जिलों में मुस्लिम आबादी प्रदर्शित की गई है। जो इस क्षेत्र में मुस्लिम समुदाय की वर्तमान स्थिति का बोध कराती है –

जिलेवार धर्म आधारित जनगणना (गढ़वाल मंडल)' वर्ष 1991

जिला	कुल जनसंख्या	हिन्दू	**मुस्लिम**	ईसाई	सिख	बौद्ध	जैन	अन्य धर्म
देहरादून	1,025,679	8,74,760	**98,748**	8,949	30,417	8,345	4,159	225
पौड़ी	6,82,535	6,63,485	**15,495**	1,639	1,165	145	256	283
टिहरी	5,80,153	5,74,330	**4,818**	285	412	70	139	66
उत्तरकाशी	2,39,709	2,35,550	**2,164**	89	241	1,377	284	2
चमोली एवं रुद्रप्रयाग	4,54,871	4,49,973	**3,274**	120	885	209	95	59
हरिद्वार	1,12,4,488	7,68,688	**3,38,146**	1,990	12,822	359	2,397	17
कुल योग	4,10,7,435	3,56,6,786	**4,62,645**	13,072	45,942	10,505	7,330	652

***** स्रोतः– कौशिक, सुशीला, 2004, जेण्डर प्रोफाइल, ए सिचुएशनल एनालिसिस ऑफ वूमन एण्ड गर्ल्स इन उत्तरांचल, नेशनल कमीशन फॉर वूमन, 2004 रिपोर्ट, नई दिल्ली में प्रकाशित जनसांख्यिकीय आकड़ें।

जिलेवार धर्म आधारित जनगणना (गढ़वाल मंडल)' वर्ष 2001

जिला	कुल जनसंख्या	हिन्दू	**मुस्लिम**	ईसाई	सिख	बौद्ध	जैन	अन्य धर्म
देहरादून	1,28,2,143	1,08,6,094	**1,39,197**	10,322	33,379	7,499	5,018	166
पौड़ी	6,97,078	6,73,471	**20,157**	1,915	892	95	264	7
टिहरी	6,04,747	5,96,769	**6,390**	533	561	69	147	44
उत्तरकाशी	2,95,013	2,90,201	**2,817**	230	284	1,239	157	871
चमोली	3,70,359	3,65,396	**3,725**	240	439	171	26	0
हरिद्वार	1,44,7,187	9,44,927	**4,78,274**	3,048	17,326	647	2,451	30
रुद्रप्रयाग	2,27,439	2,25,773	**1,406**	48	54	32	13	23
कुल योग	4,92,3,966	4,18,2,631	**6,51,966**	16,336	52,935	9,779	8,076	1,141

***** स्रोतः– कौशिक, सुशीला, 2004, जेण्डर प्रोफाइल, ए सिचुएशनल एनालिसिस ऑफ वूमन एण्ड गर्ल्स इन उत्तरांचल, नेशनल कमीशन फॉर वूमन, 2004 रिपोर्ट, नई दिल्ली में प्रकाशित जनसांख्यिकीय आकड़ें।

नोटः– जनगणना 2011 के अनुसार सम्पूर्ण उत्तराखण्ड की आबादी 1,01,16,752 है जिसमें कुल मुस्लिम आबादी 12,03,893 अर्थात् 11.90 प्रतिशत लेकिन अभी जिलेवार धर्म आधारित जनगणना (गढ़वाल मंडल) उपलब्ध नहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पोखरिया, देवसिंह, 2009, उत्तराखण्ड लोक संस्कृति और साहित्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली।
2. उनियाल, हेमा, 2011, केदारखण्ड (धर्म, संस्कृति, वास्तुशिल्प एवं पर्यटन) तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नवानी/रावत, 2010, विनसर उत्तराखण्ड ईयर बुक–2010, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून।
4. रावत, देवेंद्र, गोपेश्वर, दिनॉक 24 जुलाई सन् 2011, देहरादून संस्करण, दैनिक जागरण समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
5. दिनाँक 07 अक्टूबर सन् 2011, देहरादून संस्करण, दैनिक अमर उजाला समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
6. दिनाँक 06 अक्टूबर सन् 2011, देहरादून संस्करण, दैनिक जागरण समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
7. भट्ट, क्रांति, गोपेश्वर, दिनॉक 07 मार्च सन् 2012, देहरादून संस्करण, दैनिक हिन्दुस्तान समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
8. कुड़ियाल, रमेश, दिनॉक 06 अक्टूबर सन् 2011, देहरादून संस्करण, दैनिक अमर उजाला समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
9. रावत, लखपत, दिनॉक 20 अगस्त सन् 2012, देहरादून संस्करण, दैनिक अमर उजाला समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
10. दिनाँक 01 सितम्बर सन् 2011, देहरादून संस्करण, दैनिक अमर उजाला समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
11. नवानी/रावत, 2011, विनसर उत्तराखण्ड ईयर बुक–2011, विनसर पब्लिशिंग कम्पनी, देहरादून।
12. कुकरेती, दिनेश, दिनॉक 30 जनवरी सन् 2010, दैनिक जागरण समाचार पत्र में प्रकाशित लेख।
13. कौशिक, सुशीला, 2004, जेण्डर प्रोफाइल, ए सिचुएशनल एनालिसिस आफॅ वूमन एण्ड गर्ल्स इन उत्तरांचल, नेशनल कमीशन फॉर वूमन, 2004 रिपोर्ट, नई दिल्ली।
14. जैदी, एस0 ए0 एच0 एवं जैदी रेहाना, 1985, गढ़वाल मुगल सम्बन्ध (1526–1707 ई0), हिमालया न्यूज एजेंसी, पौड़ी गढ़वाल।